International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 490-492

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 490-492
www.allresearchjournal.com
Received: 17-01-2016
Accepted: 20-02-2016

डॉ. दीपक भारद्वाज
सह–आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Correspondence
डॉ . दीपक भारद्वाज
सह–आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)

कला समीक्षा का बदलता स्वरूप

डॉ. दीपक भारद्वाज

सार
कला समीक्षकों, मनीषियों तथा विवेचनाशील कला इतिहासकारों ने विभिन्न कलाधारायें प्रवाहित करने वाले कलाकारों से समय–समय पर हमारा साक्षात्कार कराया हैं। पहले कलाकार और कला प्रेमी होते थे उनकी जगह अब कलाकार व बाजार है। पहले कलाकार चाहता था कि लोग उसकी प्रदर्शनियों में आये उसके कार्य को देखे, उसकी सराहना करें, आलोचना करे। लेकिन आज कलाकार केवल बाजार के लिये कार्य करते हैं। गम्भीर कला समीक्षा समाप्त हो गयी हैं। अतः कला के क्षेत्र में गम्भीरता लानी है तो कला समीक्षा को पुनः स्थापित करना होगा।

कूट शब्दः कला समीक्षा, सांस्कृतिक

कला की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और सामाजिक पुष्ठभूमि निर्धारित करने, कला रसिकों को विभिन्न कलाधाराओं से परिचित कराने तथा कलाकारों में सृजन की निष्पक्ष समीक्षा करने में कला समीक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रारम्भ से ही कला समीक्षक कलाकार और कला रसिकों व दर्शकों के मध्य सुदृढ़ सम्बन्धों की महत्वपूर्ण कड़ी रहा है। कला समीक्षकों, मनीषियों तथा विवेचनाशील कला इतिहासकारों ने विभिन्न कलाधाराऐं प्रवाहित करने वाले कलाकारों से समय–समय पर हमारा साक्षात्कार कराया है।

भारतीय कला–दर्शन, धर्म एवं संस्कृति के मर्मज्ञ व्याख्याकार आनन्द कुमार स्वामी ने भारतीय ग्रन्थों में निहित कला के गूढ़ मर्म को समझा और भारतीय कला के अतीत को खोजकर उसे स्पष्ट गौरव प्रदान कर उच्चतम शिखर की ओर अग्रसर किया। स्वामी के विचारानुसार किसी भी देश के सांस्कृतिक आधार के बिना कला की विवेचना असम्भव है। भारतीय कला की व्याख्या के लिए उन्होंने ऐसे प्रतिमानों की खोज की जो वेदों, भारतीय काव्यशास्त्रों तथा साहित्य में वर्णित सिद्धान्तों पर आधारित थे।[1]

वहीं अंग्रेज कला समीक्षक ई.बी.हेबल ने न केवल भारतीय कला समीक्षा की दिशा बदली अपितु आधुनिक भारत के सांस्कृतिक पुर्नजागरण को परिपक्व धरातल तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

भारतीय कला के प्रति अगाध प्रेम रखने वाले कला मर्मज्ञ रायकृष्णदास की कला व साहितय के प्रति गहरी पैठ और पहचान ने अनेक बड़े चित्रकारों, साहित्यकारों, इतिहासविदों एवं कला प्रेमियों को आकर्षित किया भारतीय कला के प्रति सच्चे स्वरूप का उद्घाटन करने की दृष्टि से उन्होंने बनारस में भारत कला भवन जैसे बड़े कला संग्रहालय की स्थापना की।[2]

वहीं कला समीक्षा का गहन ज्ञान और रूचि रखने वाले कला समीक्षकों में, कार्ल खण्डालवाला, डॉ. एम.एस.रंधावा, डॉ. मुल्कराज आनन्द, चार्ल्स फाबरी, पर्सी ब्राउन, कपिला वात्सायन, जया अप्पास्वामी, ओ.सी. गांगुली, प्राणनाथ मागों, गीता कपूर, प्रयाग शुक्ल, केशव मलिक, रतन परिमू, विनोद भारद्वाज आर.वी. साखलकर, अभय सरदेसाई, अल्का पाण्डे, हेमन्त शेष, विद्यासागर उपाध्याय, प्रेमचन्द गोस्वामी, ए.एल. दमामी, प्रकाश परिमल तथा अनेक दूसरे कला समीक्षकों ने भारतीय कलाओं की व्याख्या का भागीरथ प्रयास किया है।

1965 में राजस्थान में कला समीक्षाओं को प्रारम्भ करने व उसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान देने में किशन शर्मा, त्रिलोकी प्रसाद शर्मा, मणि मधुकर, तारादत्त निर्विरोध, पेढ़ारकर, गोपाल पुरोहित, हर्षवर्धन, भारत रत्न भार्गव आदि की प्रमुख भूमिका रही है इन्होंने ''राजस्थान पत्रिका'', ''दैनिक नवज्योति'', ''राष्ट्रदूत'' आदि राजस्थान के समाचार पत्रों में ही नहीं अपितु बाहर की पत्र–पत्रिकाओं में भी राजस्थान की तत्कालीन कला पर समीक्षात्मक लेख लिखें।[3]

आधुनिक कला पर लेखन का प्रयास केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली व राज्य ललित कला अकादमियों के माध्यम से होने लगा।

मुम्बई से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'मार्ग' तथा आईफेक्स नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'रूप लेखा' में आधुनिक व समसामयिक कला पर काफी कुछ लिखा गया।

सत्तर के दशक के आस–पास हिन्दी में 'धर्मयुग' एवं 'हिन्दुस्तान' मासिक पत्रिकाओं में कलाकारों पर उनके चित्र प्रकाशित होने लगे। धर्मयुग में तो आधुनिक कला पर 'चित्राविधि' शीर्षक से लेख अनेक वर्षो तक प्रकाशित होते रहे और दिल्ली से प्रकाशित होने वाली श्वेत–श्याम पत्रिका 'दिनमान' के प्रत्येक अंक में आधुनिक कला पर प्रयाग शुक्ल निरन्तर लिखते रहे।

निर्भिक लेखन में कला समीक्षक को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से भी रूबरू होना पड़ता है। केशव मलिक के अनुसार आज समीक्षा में जोखिम कहीं अधिक है। इनके अनुसार जिन कलाकारों पर 30–40 बार अच्छा लिखा और एक बार आलोचनात्मक लिखा तो समीक्षक हमेशा के लिये बुरे बन जाते हैं, मलिक कहते हैं कि ''स्वामीनाथन जी की बात बताता हूँ, स्वामीनाथन की एक प्रदर्शनी पर अपनी समीक्षा में ''दुहराव'' की आशंका जताई थी। वे इतने नाराज हुए कि मेरे विरूद्ध 'टाईम्स ऑफ इण्डिया' में लेख लिख डाला कि समीक्षक बन्दर की तरह होते हैं''[4]

परन्तु समय परिवर्तनशील है, यह बदलाव अनेक बार इतना तेज और अधिक होता है कि देखकर आश्चर्य होता है। कला जगत में विगत कुछ वर्षो यही हुआ है एक जमाने में हिन्दी व अंग्रेजी के समाचार पत्रों में प्रतिष्ठा सूचक माने जाने वाले और पढ़े जाने वाले कला समीक्षा के स्तम्भ लगभग समाप्त कर दिये गये।

समाचार पत्रों में प्रकाशित न होने का परिणाम है कि आज बाजार में अच्छी कला उपेक्षित रह जाती है और कमजोर कृत्तियां बिक जाती हैं। दुनिया में आज भी जो प्रतिष्ठित समाचार पत्र है, उनमें कला समीक्षा के लिये जगह होती है, हमारे यहां नहीं, इसका परिणाम कला प्रदर्शनियों में अधिकांश खरीददार व कलाकार ही आते हैं आम जनता नहीं।[5]

आज बाजार जीवन के केन्द्र में आ गया है सब कुछ उसी को ध्यान में रखकर संचालित हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि बाजार के विकास के साथ कला एवं कलाकारों के लिये नई सम्भावनाऐं जन्मी हैं। आज कलाकारों को पैसा व प्रसिद्धि दोनों मिलने लगे हैं। परनतु साथ ही सच यह भी है कि अब समाज में कला के प्रति वैसी चेतना नहीं रही जैसी पहले थी इसका बड़ा कारण मीडिया में कला की चर्चा कम होना है।

विगत वर्षो में 'पेज–थ्री' का जो कल्चर अंग्रेजी समाचार पत्रों में आया और अब धीरे–धीरे हिन्दी समाचार पत्रों में भी आता जा रहा है उसने कला समीक्षा को बेदखल कर उसकी जगह उच्चवर्गी मशहूर हस्तियों के फोटोग्राफ्स को दे दी है। आज ''पेज थ्री'' का अर्थ है पार्टी भले ही कला प्रदर्शनी के उद्घाटन की हो उसमें कलाकार व उसके कार्य की कोई चर्चा नहीं होगी उनमें इन बातों की चर्चा होगी किसने कया पहना? कोन किसके साथ हैं? क्या पी रहा है? परन्तु कलाकार और उसकी कला के बारे में दो शब्द भी नहीं होंगे।[6]

यह बाजार का प्रभाव हे जिसने समाचार पत्रों सहित पूरे संचार माध्यम को कला से विमुख कर दिया है इसके कारण आज कला प्रेमियों का बन रहा समाज भी समाप्त होता जा रहा है। कला की जो समझ समाज में उत्पन्न हो रही थी वह थम गयी है।

लंकिन आज जो कलाकार अच्छा कार्य कर रहा है उसका काम लोग देखते हैं, खरीदते हैं तथा प्रदर्शनियों में भी जाते हैं। कला का विगत कुछ वर्षो में अत्यन्त विस्तार हुआ है कलाकृतियां खरीदने की क्षमता भी बड़ी है पर इन सबमें समाचार पत्रों व पत्रिकाओं की भूमिका शून्य रही है, यह एक निराशाजनक स्थिति है। विशेष रूप से उनके लिये जो कला संस्कृति के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आज कलाकार और कला दीर्घाऐं स्वयं अपनी देखभाल करते हैं तथा स्वयं को आगे बढ़ाते हैं।

अब तो दैनिक कार्यक्रमों के स्तम्भों में भी यह देखने को मिलता है कि जो महिलाऐं मनोरंजन हेतु पेन्टिंग करती है या जो अवकाश के दिनां में समय बिताने के लिये पेन्टिंग करते हैं। उनके बारे में तो समाचार पत्र में प्रकाशित हो जाता है परन्तु जो गम्भीर कलाकार है, उनके बारे में कोई जानकारी नहीं होती एक तरह से यह अच्छा भी है ऐसे लोगों के साथ गम्भीर कलाकारों का प्रकाशित होना उनका अपमान ही होगा। मैं स्वयं यह नहीं समझता कि ''पेज–थ्री'' पर मेरा साक्षात्कार प्रकाशित हो या मेरी पेन्टिंग प्रकाशित हो, जहाँ फैशन, पिज्जा और दुनिया भर की सेल के विज्ञापन प्रकाशित होते हैं।[7]

पहले कलाकार और कला प्रेमी होते थे उनकी जगह अब कलाकार और बाजार है पहले कलाकार चाहता था कि लोग उसकी प्रदर्शनियों में आये उसके कार्य को देखे, उसकी सराहना करे, आलोचना करें अब तो कलाकार केवल बाजार के लिये कार्य करते हैं। गम्भीर कला समीक्षा समाप्त हो गयी है। आज कलाकार और खरीददार दोनों ही यह समझने लगे हैं कि कला के क्षेत्र में गम्भीरता लानी हे तो कला समीक्षा को पुनः से स्थापित करना होगा।

लेकिन प्रसिद्ध कला समीक्षक व क्यूरेटर अलका पाण्डे ''पेज थ्री'' पर कलाकारों के चित्र प्रकाशित होने को बुरा नहीं मानती उनके अनुसार इससे कलाकारों का प्रचार होता हे लोग उन्हें पहचानने लगते हैं। पाण्डे के अनुसार इसका विरोध आज इसलिये हो रहा है क्योंकि कलाकार लोकप्रिय हो रहे हैं। पाण्डे के अनुसार इससे कला जगत को लाभ ही हो रहा हैं कल तक जब कलाकारों की तस्वीरें प्रकाशित नहीं होती थी तो कोई कुछ नहीं कहता था। क्या कलाकारों को लोकप्रिय होने का हक नहीं है।[8]

लेकिन यह दुख की बात हे कि ''पेज–थ्री'' पर आज भी केवल धनी कलाकारों को ही स्थान मिलता है यदि युवा व प्रतिभावान कलाकारों को भी स्थान मिले तो उन्हें काफी लाभ होगा, यदि ''पेज–थ्री'' पर कला पार्टियों की फोटो की जगह या उसके साथ–साथ कला समीक्षायें भी प्रकाशित हो तो अच्छा रहेगा।[9]

आज भी ''एशियन एज'' और ''पायोनियर'' नामक समाचार पत्रों में कभी–कभार कला पर कुछ प्रकाशित हो जाता है मेरे अनुसार समाचार पत्रों में नियमित रूप से कला समीक्षाऐं प्रकाशित होनी चाहिए और ''पेज–थ्री'' पर पार्टियों के चित्रों और कला समीक्षाओं के प्रकाशन में एक सन्तुलन होना चाहिये।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, प्रकाशन–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1995, पृष्ठ–117
2. डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, प्रकाशन–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1995, पृष्ठ–118
3. आर.बी. गौतम, राजस्थान की समसामयिक कला, प्रकाशन–राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर 1989, पृष्ठ–73
4. केशव मलिक, समकालीन कला, अंक–27, (जुलाई–अक्टूबर–2005), प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–30
5. केशव मलिक, समकालीन कला, अंक–26, (जुलाई–अक्टूबर–2005), प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–56
6. वेदप्रकाश भारद्वाज, समकालीन कला, अंक 26 (मार्च–जून, 2005) प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–56
7. रामेश्वर ब्रूटा, समकालीन कला, अंक 26 (मार्च–जून, 2005) प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–57
8. अल्का पाण्डे, समकालीन कला, अंक 26 (मार्च–जून, 2005) (कला समीक्षक पव क्यूरेटर) प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–58

9. कृष्णा चन्दन, समकालीन कला, अंक 26 (मार्च–जून, 2005) (आर्ट गैलेरी संचालिका) प्रकाशन–केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–58